Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025

Page No.- 01-05

©2025 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

डॉ. अर्चना दुबे

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
श्री कृष्ण विश्वविद्यालय.

Corresponding Author :

डॉ. अर्चना दुबे

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
श्री कृष्ण विश्वविद्यालय.

भारतीय शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा की भूमिका

शोध सारांश : भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट भाषा और सांस्कृतिक पहचान है। ऐसे में शिक्षा प्रणाली के लिए मातृभाषा का प्रयोग न केवल शिक्षण को सरल और प्रभावी बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक सिद्ध होता है। मातृभाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा बालक अपनी भावनाओं, अनुभवों और विचारों को सबसे सहज रूप में व्यक्त कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में लंबे समय तक विदेशी भाषाओं, विशेष रूप से अंग्रेज़ी, को प्राथमिकता दी गई, जिससे ग्रामीण और वंचित वर्गों के बच्चों में सीखने की असमानता बढ़ी। परंतु नई शिक्षा नीति 2020 ने इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास किया है, जिसमें प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान करने पर बल दिया गया है। इससे शिक्षा अधिक समावेशी, सुलभ और प्रभावी बनने की दिशा में अग्रसर है। मातृभाषा में शिक्षा से न केवल विद्यार्थियों की समझ और अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि होती है, बल्कि यह सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं के संरक्षण का भी माध्यम बनती है। इस अध्ययन का उद्देश्य मातृभाषा आधारित शिक्षा के लाभों, चुनौतियों और इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मातृभाषा शिक्षा को अधिक जीवंत, आत्मीय और मानवीय बनाती है, जो एक सशक्त और समावेशी समाज की नींव रखती है।

बीज शब्द- मातृभाषा, शिक्षण पद्धति, सांस्कृतिक मूल्यों, प्रभावी, समावेशी, मानवीय।

1. प्रस्तावना : भारत विश्व के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहाँ भाषाई और सांस्कृतिक विविधता अत्यधिक पाई जाती है। यहाँ 22 से अधिक भाषाएँ संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त हैं और सैकड़ों बोलियाँ बोलचाल में प्रयुक्त होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा की भाषा का

प्रश्न स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम भी है। प्रारंभिक शिक्षा यदि मातृभाषा में दी जाए तो विद्यार्थी न केवल अवधारणाओं को आसानी से आत्मसात करते हैं, बल्कि आत्मविश्वास, सृजनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित करते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षा किसी विदेशी या अपरिचित भाषा में दी जाए, तो यह बच्चों के लिए बोझिल और तनावपूर्ण हो सकती है। इसीलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, विशेषकर यूनेस्को और यूनिसेफ जैसी संस्थाओं ने भी बार-बार यह अनुशंसा की है कि शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए।

2. **शोध का उद्देश्य :** भारतीय शिक्षा प्रणाली मे मातृभाषा की भूमिका पर प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. भारतीय संदर्भ में मातृभाषा आधारित शिक्षण की आवश्यकता और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना।
2. मातृभाषा में शिक्षा के शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभों का विश्लेषण करना।
3. मातृभाषा शिक्षण के सामने आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों की पहचान करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा की भूमिका का अध्ययन करना।
5. मातृभाषा आधारित शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध प्रविधि- प्रस्तुत अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। जिनमे विभिन्न शोध पत्रों, आलेख, सरकारी रिपोर्ट और दस्तावेजों से प्राप्त डाटा एवं समाचार पत्र इत्यादि का प्रयोग किया गया।

4. ऐतिहासिक और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि :

4.1 प्राचीन भारतीय परिप्रेक्ष्य : प्राचीन भारत में शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं में दी जाती थी। उदाहरण के लिए, गुरुकुल परंपरा में विद्यार्थियों को संस्कृत, प्राकृत, पाली और क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं था, बल्कि जीवन मूल्यों का निर्माण भी था, जिसमे मातृभाषा की भूमिका महत्वपूर्ण थी। मातृभाषा जीवन मूल्यों के निर्माण को आसान बनाती है।

4.2 औपनिवेशिक काल : ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेज़ी भाषा को शिक्षा का माध्यम बना दिया गया। लॉर्ड मैकाले की कार्यवृत (1835) ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को अंग्रेज़ी-केंद्रित बना दिया। इससे मातृभाषाओं की उपेक्षा हुई और शिक्षा समाज के सीमित वर्ग तक ही सिमटकर रह गई। शिक्षा के एक विशेष वर्ग मे सिमट जाने के कारण समाज का बौद्धिक एवं शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा था। बल्कि अंग्रेजी को प्रोत्साहन देने के कारण कहीं न कहीं मातृभाषा का पतन होना प्रारंभ हो गया था।

4.3 स्वतंत्रता के बाद : भारत के संविधान ने मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं को संरक्षण दिया। संविधान की अनुच्छेद 350A में कहा गया कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देने का प्रयास होना चाहिए। लेकिन व्यवहारिक स्तर पर अंग्रेज़ी माध्यम को अभी भी वरीयता दी जाती रही थी। क्योंकि बहुत लंबे वर्षों के दासत्व ने अंग्रेजी भाषा को पढे-लिखे की भाषा के रूप मे स्वीकार कर लिया था। अतः विदेशी संस्कृति एवं भाषा भारतीय समाज मे उत्कृष्टता एवं उच्चता का रूप ले चुकी थी।

4.4 आधुनिक दृष्टिकोण : वर्तमान समय मे शिक्षा मनोविज्ञान और भाषाविज्ञान दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से बच्चे की सीखने की क्षमता बढ़ती है। पियाजे (Piaget) और वायगोत्स्की (Vygotsky) जैसे मनोवैज्ञानिकों ने भाषा को संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख उपकरण माना है। माना जाता है कि जो भाषा बाल्यवस्था से बोली और समझी जाती है वह बच्चे शीघ्रता से अंगीकार कर लेते हैं। इसप्रकार मातृ भाषा बच्चों के सीखने की क्षमता मे वृद्धि ही नहीं करती वरन सीखना आसान भी बनाती है।

5. भारतीय संदर्भ में मातृभाषा की स्थिति : भारत में भाषाई विविधता इतनी अधिक है कि एक ही राज्य में कई भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में हिंदी के साथ-साथ बुंदेली, मालवी, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसे में शिक्षा की भाषा का चयन करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। निजी विद्यालयों में

अंग्रेज़ी माध्यम को प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, जबकि सरकारी विद्यालयों में अधिकांशतः हिंदी या क्षेत्रीय भाषा माध्यम है। अभिभावकों का एक बड़ा वर्ग मानता है कि अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने पर ही रोजगार और वैश्विक अवसर मिलेंगे। यही कारण है कि मातृभाषा शिक्षा को अक्सर "कमज़ोर" या "गैर-आधुनिक" समझा जाता है।

6. मातृभाषा आधारित शिक्षा के लाभ :

6.1 शैक्षणिक लाभ : अवधारणाओं की गहरी समझ– जब विद्यार्थी अपनी भाषा में सीखते हैं तो जटिल विषय भी आसानी से समझ में आते हैं। क्योंकि जब बच्चे अपनी मातृभाषा मे पढ़ता है उसे तो कठिन शब्द व शब्दावली को समझने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है और बच्चे आसानी से सीख सकते हैं।

संज्ञानात्मक विकास –मातृभाषा बच्चों की तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाती है। मातृभाषा मे सीखने के कारण उनका ध्यान विषय-वस्तु पर ही केंद्रित होता है जो उनकी तार्किकता और विश्लेषणात्मक क्षमता मे वृद्धि करती है।

शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार –पूर्व मे हुए शोध से स्पष्ट हुआ है कि मातृभाषा में पढ़ाई करने से बच्चों के सीखने की गति एवं प्रदर्शन बेहतर होता है। उनकी गणितीय योग्यता, विज्ञान को समझने की क्षमता एवं भाषा संबंधी कौशल बेहतर होता है जिससे विद्यार्थी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।

6.2 मनोवैज्ञानिक लाभ : आत्मविश्वास का विकास – मातृभाषा मे पढ़ाई करने से बच्चा खुलकर अपनी बात रख पता है। जब विद्यार्थी अपनी ही भाषा में सहजता से अभिव्यक्ति करते हैं तो उसके आत्मविश्वास मे वृद्धि होती है जो व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

तनाव में कमी– विदेशी भाषा का दबाव न होने से सीखना बोझिल नहीं लगता है अपितु अपनी भाषा मे सीखने से विषय-वस्तु आसान लगती है जो शिक्षा को रुचिकर बनाती है। अतः बच्चे मातृभाषा मे तनाव मुक्त हो कर शिक्षा गृहण कर सकेंगे।

रचनात्मकता का विस्तार– मातृभाषा सोचने और कल्पना करने की अधिक स्वतंत्रता देती है जिससे बच्चों की रचनात्मकता मे वृद्धि होती है। जो विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच का विस्तार करती है और वे बेहतर प्रदर्शन करने मे सक्षम हो पाते हैं।

6.3 सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ :

सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण –अपनी भाषा मे शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी अपनी संस्कृति, परंपरा और स्थानीय ज्ञान प्रणाली से जुड़े रहते हैं। इसप्रकार मातृभाषा शिक्षा विद्यार्थियों को उनकी जड़ों और परंपराओं से जोड़ती है। यह उन्हे गर्व की भावना और सांस्कृतिक आत्मविश्वास प्रदान करता है।

समान अवसर –ग्रामीण और निर्धन वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा अधिक सुलभ होती है। इनके अतिरिक्त आदिवासी और हाशिये पर रहने वाले समुदाय के बच्चे शिक्षा मे पिछड़ते नहीं हैं।

सामाजिक समरसता – जब सभी बच्चों को उनकी भाषा मे शिक्षा मिलती है, तो समाज मे भेदभाव कम हो जाता है सामाजिक समरसता मे वृद्धि होती है। भाषाई विविधता को सम्मान देकर समाज में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

7. मातृभाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्पष्ट अनुशंसा की है कि कक्षा 5 तक और यथासंभव कक्षा 8 तक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में दी जानी चाहिए। इसका उद्देश्य है कि बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रहें और शिक्षा बोझ नहीं बल्कि आनंद का साधन बने। यह नीति भारतीय भाषाओं को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सशक्त बनाने का प्रयास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार मातृभाषा में शिक्षा से बच्चे अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझ पाते हैं। जब बच्चे अपनी भाषा में पढ़ते हैं, तो उनके लिए विषय को समझना और अपनी रचनात्मकता का उपयोग करना सरल हो जाता है। NEP 2020 केवल मातृभाषा पर ही जोर नहीं

देती, बल्कि त्रिभाषा सूत्र को भी बढ़ावा देती है, जिसमें हिंदी, अंग्रेजी और एक क्षेत्रीय भाषा शामिल है। इसका उद्देश्य छात्रों को बहुभाषी बनाना है।

8. चुनौतियाँ :

8.1 बहुभाषी कक्षाएँ– शहरी क्षेत्रों में, एक ही कक्षा में विभिन्न मातृभाषाओं के छात्र हो सकते हैं, जिससे एक शिक्षक के लिए सभी को उनकी अपनी भाषा में पढ़ाना व्यावहारिक रूप चुनौतीपूर्ण ही नहीं असंभव हो जाता है।

8.2 पाठ्यसामग्री का अभाव– मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए पाठ्यपुस्तकें और अन्य शिक्षण सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। अधिकांश क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाओं में पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण सामग्री का अभाव है। इन्हें तैयार करने, अनुवाद करने और प्रकाशित करने में बहुत अधिक समय, प्रयास और संसाधनों की आवश्यकता होगी। सभी मातृभाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें और डिजिटल संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

8.3 प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी– भारत में 19,500 से अधिक मातृभाषाएँ और बोलियाँ हैं, लेकिन इन सभी भाषाओं में योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में यह समस्या और भी गंभीर है। जबकि नगरीय क्षेत्र अधिकांश शिक्षक अंग्रेज़ी या हिंदी माध्यम में प्रशिक्षित होते हैं।

8.4 अभिभावकों की मानसिकता– बहुत से अभिभावक अंग्रेज़ी माध्यम को ही आधुनिक और सफल मानते हैं। अभिभावक अक्सर अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाना पसंद करते हैं। उनका मानना है कि अंग्रेजी में शिक्षा से उनके बच्चों को बेहतर नौकरी और करियर के अवसर मिलेंगे। यह धारणा मातृभाषा में शिक्षा को अपनाने में एक बड़ी बाधा है। निजी स्कूल भी अक्सर अंग्रेजी को ही शिक्षा का माध्यम बनाए रखते हैं, जिससे सरकारी और निजी स्कूलों के बीच एक भाषाई विभाजन पैदा होता है।

8.5 वैश्विक प्रतिस्पर्धा– उच्च शिक्षा और रोजगार में अंग्रेज़ी की मांग अधिक होने से मातृभाषा शिक्षा को उपेक्षा मिलती है। राष्ट्रीय स्तर की अधिकांश परीक्षाओं, उच्च शिक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अंग्रेजी का प्रभुत्व बना हुआ है, यह उन छात्रों के लिए एक बाधा बन सकता है जिन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की है।

9. समाधान और सुझाव :

बहुभाषी शिक्षा मॉडल– इसप्रकार की कक्षाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है, जहाँ मातृभाषा और अंग्रेजी (या अन्य वैश्विक भाषा) दोनों का उपयोग किया जाए। यह बच्चों को उनकी मातृभाषा में मजबूत आधार प्रदान करते हुए उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएगा। मातृभाषा के साथ हिंदी और अंग्रेज़ी का संतुलित प्रयोग बच्चों के भविष्य की राह आसान करेगा।

पाठ्यसामग्री का विकास/तकनीकी का प्रयोग – कृत्रिम बुद्धि और डिजिटल टूल्स का उपयोग कर बहुभाषी शिक्षा को सरल बनाने की आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री को विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवादित और अनुकूलित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक तंत्र स्थापित किया जा सकता है। प्रत्येक मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें और ई-संसाधन उपलब्ध कराना। डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करके शिक्षण सामग्री को विभिन्न भाषाओं में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है। सरकार दीक्षा (DIKSHA) जैसे पोर्टलों पर ई-पाठ्यपुस्तकों और वीडियो सामग्री को क्षेत्रीय भाषाओं में बढ़ावा दे सकती है।

शिक्षक प्रशिक्षण– स्थानीय भाषाओं में शिक्षण में सक्षम शिक्षकों की भर्ती को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मातृभाषा शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को बहुभाषी शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित करने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए, ताकि वे विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के छात्रों को पढ़ा सकें। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में काम करने वाले शिक्षकों को अतिरिक्त प्रोत्साहन जैसे, आवास और भत्ता दिया जा सकता है, ताकि वे वहाँ सेवा करने के लिए प्रेरित हों।

जन-जागरूकता अभियान – अभिभावकों और समाज को मातृभाषा के महत्व से अवगत कराना। मातृभाषा में शिक्षा

के लाभों के बारे में जागरुक करने के लिए व्यापक अभियान चलाए जाने चाहिए। जन जागरूकता अभियान के द्वारा लोगों को समझाने की आवश्यकता है कि मातृभाषा में एक मजबूत नींव भविष्य में किसी भी भाषा को सीखने के लिए सहायक होती है, और यह कोई बाधा नहीं है। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चे अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझ पाते हैं। यह उनके संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है और उनमें सीखने के प्रति रुचि जगाता है। माता-पिता को बताया जाए कि कैसे वे अपने बच्चों को घर पर उनकी मातृभाषा में सीखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। उन्हें बच्चों के साथ उनकी भाषा में बात करने और किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।

नीतिगत सहयोग – सरकार को बजट और योजनाओं में मातृभाषा शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में प्रवेश परीक्षाओं में क्षेत्रीय भाषाओं में भी विकल्प उपलब्ध कराए जाएं। इससे मातृभाषा में पढ़े हुए छात्रों को समान अवसर मिलेंगे। उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा जैसे इंजीनियरिंग और चिकित्सा में मातृभाषा को एक माध्यम के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे विषय को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। सरकार विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्ति और अनुदान प्रदान करना। यह मातृभाषाओं को ज्ञान की भाषा के रूप में स्थापित करने में मदद करेगा।

निष्कर्ष : भारतीय शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा आधारित शिक्षण को केवल भाषा का प्रश्न नहीं है, इसे शैक्षणिक न्याय और सामाजिक समानता का मुद्दा समझना चाहिए। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, तो वे जटिल अवधारणाओं को आसानी से समझ पाते हैं। इससे रटने की प्रवृत्ति कम होती है और गहरी समझ को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा, मातृभाषा का उपयोग छात्रों को कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे एक समावेशी शैक्षिक वातावरण बनता है। मातृभाषा मे शिक्षा विद्यार्थियों को आत्मविश्वासी, रचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती है। यह उन्हें उनकी जड़ों से जोड़े रखती है और समाज को अधिक समावेशी बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा के महत्व को पुनः स्थापित किया है, जिसे अपनाने में कुछ चुनौतियां हैं, जैसे कि शिक्षण सामग्री की कमी बहुभाषी कक्षाएँ और अभिभावकों की मानसिकता इत्यादि। इसके सफल क्रियान्वयन के लिए संसाधनों, शिक्षक प्रशिक्षण और समाज की मानसिकता में बदलाव आवश्यक है। यदि मातृभाषा को शिक्षा का मूल आधार बनाया जाए तो भारत की शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी, सुलभ और मानवीय बन सकती है। मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाना केवल एक शैक्षिक रणनीति नहीं, बल्कि एक मानवीय आवश्यकता है। यह छात्रों को उनकी सांस्कृतिक पहचान से जोड़े रखती है, उन्हें सशक्त बनाती है और एक न्यायपूर्ण व समान शिक्षा प्रणाली का निर्माण करती है। इस अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए महत्वपूर्ण हैं, ताकि वे एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा दे सकें जो हर बच्चे की क्षमता को पूरी तरह से विकसित करने में मदद करे।

संदर्भ सूची :

1. Mishra, R. (2021). "The Role of Home Language in Early Childhood Education." Journal of Educational Studies, 15(2), 45-60.
2. UNESCO. (2023). Why mother-tongue based education is essential. Retrieved from http://www.unesco.org/education/mothertongue.
3. Sharma, V. (2022). "Challenges and Opportunities of Mother Tongue Instruction in Multilingual Classrooms."
4. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2159311
5. https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue9/PartB/6-9-7-410.pdf

•